

अभ्यास - 2

1. "सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है" यह कहा है-
 - (a) कॉल व बूस ने (b) जेम्स ड्वेवर ने
 - (c) क्रो एण्ड क्रो ने (d) प्रो. रुश ने
2. सृजनात्मकता से तात्पर्य है-
 - (a) व्यक्ति ने नवीन कार्य करने की क्षमता
 - (b) बुद्धि की क्षमता से अर्थ नहीं
 - (c) अधिगम व अभिवृद्धि
 - (d) समाज द्वारा तिरस्कृत गुण है
3. सृजनशील बालक के गुण हैं-
 - (a) विनोद प्रवृत्ति
 - (b) समायोजनशील
 - (c) सौन्दर्यात्मक विकास
 - (d) ये सभी
4. शिक्षा में सृजनशीलता का प्रयोग किस रूप में होता है-
 - (a) सीखना (b) कल्पना
 - (c) तर्क, चिन्तन (d) इनमें से सभी
5. निम्न तथ्य सत्य नहीं है-
 - (a) सृजनात्मकता वातावरण अधिगम तथ्य अमिट से प्रभावित हो सकती है
 - (b) कम बुद्धि वाला सृजनशील हो सकता है
 - (c) केवल उच्च बुद्धि वाला सृजनशील हो सकता है
 - (d) सृजनात्मकता नये कार्य करने की क्षमता
6. सृजनशील बालक की विशेषता है-
 - (a) स्वतंत्र निर्णय शक्ति
 - (b) अपनी बात पर दृढ़
 - (c) बहुत से विचारों पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता
 - (d) उपरोक्त सभी
7. विशिष्ट बालक की प्रमुख विशेषता है-
 - (a) मानसिक न्यूनता से ग्रस्त बालक
 - (b) प्रतिभाशाली बालक
 - (c) साधारण बालकों से भिन्न गुण व व्यवहार वाला बालक
 - (d) मंद बुद्धि बालकों की अपेक्षा तीव्र बुद्धि वाला बालक
8. प्रतिभाशाली बालकों की विशेषता है-
 - (a) कल्पना, तर्क, स्मृति आदि का विकास
 - (b) उदार व हंसमुख प्रवृत्ति वाले
 - (c) दूसरों का सम्मान करते हैं, विद्वत्ते नहीं
 - (d) इनमें सभी।
9. विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते हैं केवल
 - (a) प्रतिभाशाली बालक
 - (b) पिछड़े बालक
 - (c) समस्यात्मक बालक
 - (d) ये सभी
10. शारीरिक रूप से अक्षम बालकों को किस श्रेणी में रखते हैं ?
 - (a) प्रतिभाशाली (b) विकलांग
 - (c) सामान्यात्मक (d) पिछड़े
11. वंचित बालकों के शिक्षण का तरीका होना चाहिए-
 - (a) कठोर (b) लचीला
 - (c) समान (d) आदेशात्मक
12. बालक के वंचित होने का सर्वप्रमुख दायित्व किस पर होता है ?
 - (a) माता-पिता पर (b) शिक्षक पर
 - (c) समाज पर (d) इनमें से कोई नहीं
13. सृजनात्मक के आयाम में मुख्य है
 - (a) मौलिकता (b) संवेगात्मकता
 - (c) व्यावहारिकता (d) ये सभी
14. मानस मन्दता के स्तर में मुख्य है-
 - (a) जड़ बुद्धि (b) मूढ़ बुद्धि
 - (c) मूर्ख (d) उपरोक्त सभी
15. मन्दबुद्धि बालकों की बुद्धि-लब्धि होती है-
 - (a) 70 से कम (b) 75 से कम
 - (c) 85 से कम (d) उपरोक्त सभी
16. निर्योग्यता का अर्थ है-
 - (a) कार्यकुशलता
 - (b) क्षमता का अभाव
 - (c) योग्यता का अभाव
 - (d) कुशाग्रबुद्धि

17. अधिगम नियोग्य बालक के होते हैं जिनमें पायी जाती है-
 (a) अतिक्रियाशीलता
 (b) सार्वेगिक अस्थिरता
 (c) प्रोत्साहन में कमी
 (d) उपरोक्त सभी
18. सृजनात्मकता की मुख्य पहचान क्या है?
 (a) कला (b) साहित्य
 (c) विज्ञान (d) नवसृजन
19. सृजनात्मकता का मुख्य तत्त्व क्या है ?
 (a) मौलिकता (b) पुनर्परिभाषीकरण
 (c) सृजनात्मक उत्पादन (d) ये सभी
20. सृजनात्मक परीक्षण कितने प्रकार के हैं?
 (a) एक (b) दो
 (c) तीन (d) चार
21. मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति में कौन-सी विशेषता नहीं होती है?
 (a) आशावादी (b) निराशावादी
 (c) लगनवादी (d) प्रायोगिक
22. बालक अपराध का कारण है-
 (a) दूषित वातावरण (b) अच्छी संगति
 (c) स्वस्थ मनोरंजन (d) अपराधी क्षेत्र
23. बाल अपराध रोकने में विद्यालय कैसे सक्षम है?
 (a) योग्य अध्यापकों की नियुक्ति द्वारा
 (b) स्वस्थ मनोरंजन देकर
 (c) नैतिक शिक्षा देकर
 (d) ये सभी
24. "वह जो एक स्कूल खोलता है, एक जेल बंद करता है" यह कहना है-
 (a) ब्रुगे का (b) फ्रायड का
 (c) होली का (d) सेथना का
25. बाल अपराधी के लक्षण हैं-
 (a) चोरी करना (b) उदरदंडा करना
 (c) झूठ बोलना (d) ये सभी
26. बाल अपराध का उपचार किस विधि द्वारा होता है-
 (a) मनोवैज्ञानिक व वैधानिक विधि द्वारा
 (b) वैज्ञानिक विधि द्वारा
 (c) समाज से निंदा द्वारा
 (d) कानून द्वारा कड़ी सजा देकर
27. योग्य, मेहनती एवं मेधावी छात्रों को उनकी सफलता पर उन्हें प्रदान की जाती है-
 (a) छात्रवृत्ति (b) पुस्तकें
 (c) प्रशस्ति-पत्र (d) शुल्क मुक्ति
28. बाकर मेहदी के शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन परीक्षा में कितने शाब्दिक उपपरीक्षण हैं?
 (a) 2 (b) 3
 (c) 4 (d) 5

उत्तरमाला

1	(b)	5	(c)	9	(d)	13	(d)	17	(c)	21	(b)	25	(d)
2	(a)	6	(d)	10	(b)	14	(d)	18	(d)	22	(a)	26	(a)
3	(d)	7	(c)	11	(b)	15	(c)	19	(d)	23	(d)	27	(a)
4	(a)	8	(d)	12	(c)	16	(c)	20	(b)	24	(a)	28	(c)

शिक्षण अधिगम की मूल प्रक्रियाएँ

बालक के अधिगम के पीछे अनेक तत्त्व कार्य करते हैं। बालक के आनुवांशिक कारक, वातावरण, उसका व्यक्तित्व, अनुभव व दिया जाने वाला प्रशिक्षण अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बालक के माता-पिता के सोचने का तरीका, उनके द्वारा दी गई शिक्षा व वातावरण बालक को मुख्य रूप से सोचने व सीखने को प्रेरित करता है। विद्यालय में प्रवेश करने पर वहाँ का परिवेश व शिक्षक द्वारा प्रयुक्त की जा रही विधियाँ बालक के सीखने में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

वर्तमान समय में विद्यालयों में अपनायी जाने वाली प्रभावहीन व परम्परागत शिक्षण विधियों द्वारा बालक उचित अधिगम नहीं कर पाते जिसके कारण उनका चहुँमुखी विकास नहीं हो पाता। बालकों के शिक्षण हेतु विद्यालयों में प्रभावशाली शिक्षण विधियों को प्रयुक्त किया जाना चाहिए। अधिकांशतः दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग करके शिक्षण को सरल, सरस व प्रभावशाली बनाना चाहिये। प्रारम्भ में बालक अनुकरण द्वारा सीखता है। वह उसे करके देखता है जो उसे सिखाया जा रहा है। अतः बालक के समक्ष उचित विधि से कार्य करें ताकि वह उचित अनुभवों को प्राप्त करें। बालक सुनकर, देखकर व स्वयं करके सीखता है। बालक सीखता तो स्वयं ही है, परन्तु शिक्षक, माता-पिता व समाज के अन्य व्यक्ति उसे ये अवसर प्रदान करते हैं। इन सभी का दायित्व बनता है कि वे बालकों को उचित, बुद्धिहीन व प्रभावशाली अवसर प्रदान करें।

शिक्षा मनोविज्ञान बालकों को सिखाने के लिये अनेक विधियों को प्रस्तुत करता है, परन्तु उससे पहले यह जानना जरूरी है कि सीखना क्या है?

मनुष्य एक अधिगमशील प्राणी है और अधिगम प्रक्रिया उसके जन्म से ही नहीं अपितु जन्म के पूर्व ही प्रारम्भ (गर्भावस्था में) हो जाती है। वीर अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही चक्रव्यूह तोड़ना सीख लिया, अधिगम का यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। प्रारम्भ में शिशु विल्कुल असहाय व पराश्रित होता है, परन्तु धीरे-धीरे वह अपने को वातावरण से समायोजित करने का प्रयत्न करता है। इस समायोजन की प्रक्रिया में वह अपने अनुभवों से लाभ उठाता है, इसे ही अधिगम या सीखना कहा जाता है। अधिगम की परिभाषा इस प्रकार दी गई है-

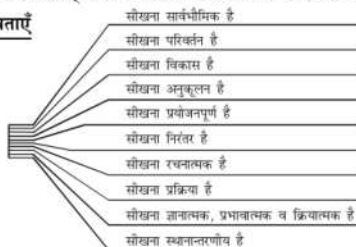
वुडवर्थ- "नवीन ज्ञान व नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया अधिगम की प्रक्रिया है।"

क्रो एण्ड क्रो- "अधिगम आदतों ज्ञान व अभिवृत्तियों का अर्जन है।

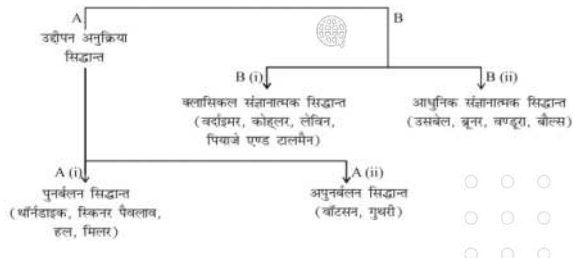
क्रानवैक- अधिगम अनुभव के परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि सीखना व्यवहार का परिमार्जन है। एक बार व्यवहार में परिवर्तन होने के पश्चात् नवीन परिस्थिति में उस परिवर्तित व्यवहार का संशोधन हो सकता है।

सीखने की विशेषताएँ



सीखने के मुख्य सिद्धान्त



अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त

- | | |
|---|--|
| 1. थार्नडाइक का उद्दीपक अनुक्रिया सिद्धान्त | 2. पैबलाव का शास्त्रीय अनुकूलन सिद्धान्त |
| 3. स्किनर का सक्रिय अनुकूलन सिद्धान्त | 4. कोह्लर का सूझ का सिद्धान्त |
| 5. हल का सबलीकरण का सिद्धान्त | 6. कूर्टलेविन का क्षेत्र सिद्धान्त |
| 7. टॉलमैन का चिन्ह अधिगम सिद्धान्त | 8. गुथरी का सामोप्य अनुकूलन सिद्धान्त |
| 9. बन्दूरा का प्रतिरूपण सिद्धान्त | |

थार्नडाइक द्वारा दिये गये सीखने के बुनियादी नियम

मुख्य नियम

- | | |
|--------------------|-------------------|
| 1. तत्परता का नियम | 2. अभ्यास का नियम |
| 3. प्रभाव का नियम | |

गौण नियम

- | | |
|-----------------------------|--------------------------|
| 1. बहुप्रतिक्रिया का नियम | 2. मानसिक स्थिति का नियम |
| 3. आंशिक क्रिया का नियम | 4. समानता का नियम |
| 5. साहचर्य परिवर्तन का नियम | |

शिक्षण सूत्र

मनोवैज्ञानिक खोजों के आधार पर शिक्षणसूत्रों ने कुछ शिक्षण सूत्रों को प्रतिपादित किया है, ये शिक्षण सूत्र इस प्रकार हैं-

- | | |
|---------------------------------------|-----------------------------------|
| 1. ज्ञात से अज्ञात की ओर | 2. स्थूल से सूक्ष्म की ओर |
| 3. सरल से जटिल की ओर | 4. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर |
| 5. पूर्ण से अंश की ओर | 6. अनिश्चित से निश्चित की ओर |
| 7. विरलेषण से संश्लेषण की ओर | 8. विशिष्ट से सामान्य की ओर |
| 9. मनोवैज्ञानिक से तार्किक क्रम की ओर | 10. अनुभूत से युक्तियुक्त की ओर । |

शिक्षण व अधिगम की प्रक्रिया

शिक्षण को सामान्यतः ज्ञान व कौशल के सम्प्रेषण के रूप में देखा समझा जाता है। वास्तव में यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाला, सीखने वाले को प्रभावित करता है, सीखने में उनकी सहायता करता है। अतः कहा जा सकता है कि- "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें सिखाने वाला सीखने वालों के लिये विभिन्न विधियों, युक्तियों व साधनों द्वारा सीखने की परिस्थितियों का निर्माण करते हैं तथा सीखने वाले इनकी सहायता से सीखते हैं। शिक्षण का तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक सीखने वाले सीख नहीं जाते, उनके व्यवहार में वांछित परिवर्तन नहीं हो जाता।

शिक्षण के प्रकार

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण को उद्देश्यों की दृष्टि से तीन भागों में बांटा जा सकता है -

1. ज्ञानात्मक शिक्षण
2. भावात्मक शिक्षण
3. क्रियात्मक शिक्षण

शिक्षण के स्तरों की दृष्टि से भी तीन भागों में बांटा जा सकता है-

1. स्मृति स्तर
2. बोध स्तर
3. चिन्तन स्तर

शिक्षण के चर

1. स्वतंत्र चर (शिक्षक)
2. आश्रित चर (छात्र)
3. हस्तक्षेप चर (पाठ्यवस्तु व विधियाँ)

शिक्षण प्रक्रिया में तीन चर हैं-

1. स्वतंत्र चर (शिक्षक) : शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को स्वतंत्र चर की संज्ञा दी जाती है। शिक्षण व्यवस्था, नियोजन तथा उसका परिचालन शिक्षक द्वारा किया जाता है।
2. आश्रित चर (छात्र) : शिक्षण प्रक्रिया में छात्र को आश्रित चर माना जाता है, क्योंकि शिक्षण नियोजन व्यवस्था तथा प्रस्तुतिकरण के अनुसार ही उसे क्रियाशील रहना होता है।
3. हस्तक्षेप चर (पाठ्यवस्तु) : शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्तः प्रक्रिया का माध्यम शिक्षण विधि व शिक्षण सामग्री का स्वरूप उनकी अनुक्रियाओं में हस्तक्षेप करती है।

शिक्षण चरों के कार्य

शिक्षण चरों को तीन प्रमुख क्रियाएँ करनी होती हैं-

- निदान करना। - उपचार करना। - मूल्यांकन करना।

शिक्षण की अवस्थाएँ

1. शिक्षण की पूर्व तत्परता अवस्था
2. शिक्षण की अन्तःप्रक्रिया अवस्था
3. शिक्षण की तत्परता के बाद की अवस्था
1. शिक्षण की पूर्व तत्परता अवस्था (Pre-Active Phase)
 - (A) शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना
 - (B) पाठ्यवस्तु के सम्बन्ध में निर्णय लेना
 - (C) प्रस्तुतिकरण के लिये क्रमबद्ध व्यवस्था
 - (D) शिक्षण की युक्तियों व विधियों का चुनाव

इस अवस्था तक पहुँचने हेतु वह अध्यापक व माता-पिता दिये गये शिक्षण, मार्गदर्शन, संस्कार व मूल्यों का प्रयोग करता है। वह सर्वोत्तम का चयन करने योग्य बन जाता है तथा अपने मार्ग में अपने वाली समस्याओं का समाधान करता है।

संज्ञान व संवेग

संज्ञान से अभिप्राय एक ऐसी प्रक्रिया से होता है जिसमें संवेदन, प्रत्यक्षण, प्रतीति, धारणा, प्रत्यास्मरण समस्या समाधान, तर्क, जैसी मानसिक क्रियायें सम्मिलित होती हैं। अतः संज्ञान से तात्पर्य है संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उसका रूपांतरण, विस्तरण, संग्रहण, पुनर्लाभ तथा उसका समुचित प्रयोग करने से होता है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य बालकों में किसी संवेदी सूचनाओं को ग्रहण करके उस पर चिन्तन करने तथा क्रम से उसे इस लायक बना देने से होता है जिसका प्रयोग विभिन्न परिस्थितियों में करके वे तरह-तरह की समस्या समाधान कर सकते हैं। संज्ञानात्मक विकास के अध्ययन के क्षेत्र में जीन पियाजे का सिद्धान्त एक अभूतपूर्व सिद्धान्त माना गया है। उन्होंने बालक के चिन्तन व तर्क के विकास में जैविक व संरचनात्मक तत्त्वों पर प्रकाश डालकर संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या की है। बाद में जे. एस. ब्रूनर तथा वाइगोट्स्की ने भी संज्ञानात्मक विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संवेग

'संवेग शब्द अंग्रेजी के इमोशन Emotion शब्द का हिन्दी रूपान्तर है Emotion शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Emovere से मानी जाती है जो 'उत्तेजित करने', 'हलचल मचाने', 'उथल-पुथल' जैसे अर्थों में प्रयुक्त होता है।

मनोवैज्ञानिकों ने संवेग की परिभाषा अपने दृष्टिकोण से निम्न प्रकार से दी है:

वुडवर्थ— "संवेग, व्यक्ति की उत्तेजित दशा है"

क्रो एण्ड क्रो— "संवेग वह भावनात्मक अनुभूति है जो व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक उत्तेजनापूर्ण अवस्था तथा सामान्यीकृत आन्तरिक समायोजन के साथ जुड़ी होती है जिसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित बाहरी व्यवहार द्वारा होती है।"

मैक्डगल ने मूल प्रवृत्तियों को जन्मजात प्रवृत्तियाँ मानते हुए उन्हें सभी प्रकार के संवेगों के जन्म देने वाला कहा है। उनके अनुसार मूल प्रवृत्ति जन्म व्यवहार के तीन पक्ष होते हैं—

1. ज्ञानात्मक पक्ष
2. भावात्मक पक्ष
3. क्रियात्मक पक्ष

संवेग के प्रकार

संवेग का सम्बन्ध मूल प्रवृत्तियों से होता है। मूल प्रवृत्तियाँ चौदह बताई गई हैं। प्रत्येक से जुड़ा एक संवेग है। मैक्डगल द्वारा बताये गये चौदह मूल प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—

क्रमांक	मूल प्रवृत्ति	सम्बन्धित संवेग
1.	पलायन (Escape)	भय (Fear)
2.	युद्धसा (Combat)	क्रोध (Anger)
3.	निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)
4.	विज्ञासा (Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)
5.	शिशुरक्षा (Parental)	वात्सल्य (Love)
6.	शरणार्थिता (Appeal)	विषाद (Distress)
7.	रचनात्मक (Construction)	संरचनात्मक भावना (Feeling of creativeness)
8.	संचय प्रवृत्ति (Acquisition)	स्वामित्व की भावना (Feeling of ownership)
9.	सामूहिकता (Gregariousness)	एकाकीपन (Feeling of loneliness)

10. काम (Sex)	कामुकता (Lust)
11. आत्म-गौरव (Self-assertion)	श्रेष्ठता की भावना (Positive self-feeling)
12. दैन्य (Submission)	आत्महीनता (Negative self-feeling)
13. भोजन-अन्वेषण (Food seeking)	भूख (Appetite)
14. हास (Laughter)	आमोद (Amusement)

संवेगों की प्रकृति व विशेषताएँ

- संवेग के स्वरूप व संवेगात्मक विकास को अच्छी तरह समझने के लिये संवेगों की विशेषताओं को जानना आवश्यक है। ये इस प्रकार हैं-
 - संवेग की व्यापकता :** संवेग सभी प्राणियों में पाये जाते हैं, परन्तु इनकी प्रबलता प्रत्येक प्राणी में भिन्न-भिन्न होती है।
 - शारीरिक परिवर्तन :** संवेग की दशा में दो प्रकार के परिवर्तन होते हैं-
 - आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन (i) बाहरी शारीरिक परिवर्तन
 आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन में जल्दी-जल्दी सांस लेना, हृदय की धड़कन तेज होना, पाचन क्रिया प्रभावित होना आदि सम्मिलित हैं।
 बाहरी शारीरिक परिवर्तन में मुख मंडल के प्रकाशन में अन्तर आना, आवाज में परिवर्तन होना आदि दिखाई देते हैं।
 - विचार प्रक्रिया का लुप्त होना :** संवेगात्मक दशा में व्यक्ति अपनी सामान्य स्थिति में नहीं रहता और उचित-अनुचित पर विचार नहीं कर पाता। जैसे-क्रोध आने पर मारने, पीटने को तैयार हो जाना।
 - मूल प्रवृत्तियों से सम्बन्ध :** संवेग की उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है।
 - व्यक्तिकता :** संवेगों के प्रकाशन में वैयक्तिकता होती है। संवेग व्यक्ति में स्वभाव, अवस्था तथा परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप में प्रकट होता है।
 - संवेगों में अस्थिरता :** संवेग अस्थिर होते हैं। संवेग की दशा थोड़े समय तक होती है। जैसे-क्रोध में माँ बालक को पिटाई कर देती है, परन्तु थोड़ी देर बाद वह करुणा व वात्सल्य से पूर्ण हो जाती है।
 - संवेग में क्रियात्मक प्रवृत्ति का होना :** प्रत्येक संवेग का सम्बन्ध एक क्रियात्मक प्रवृत्ति से होता है। जैसे-भय में भागना, आमोद में हँसना, क्रोध में मुट्ठी बंध जाना तथा भुजायें फड़कना आदि।

बालक के संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्व

सीखने की प्रक्रिया में संवेग सहायक होते हैं। बालक की पढ़ाई के प्रति रुचि जागृत हो, इसके लिये आवश्यक है कि बालक में संवेगों का उचित विकास हो। संवेगों के कारण ही उसका व्यवहार व स्वभाव नियन्त्रित होता है। उसके अच्छे स्थायी भावों व आदर्शों का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ही उसके अवांछनीय प्रकृति के संवेगों, जैसे-क्रोध, भय, घृणा आदि का शोधन व मार्गान्तरिकरण किया जा सकता है। पाठ्येतर क्रियाओं (Extra-Curricular Activities) जैसे- नाटक, खेल प्रतियोगिताएँ सरस्वती यात्राएँ, स्काउटिंग आदि के द्वारा संवेगों का विकास होता है। इस सम्बन्ध में टी. जरशील्ड कहते हैं- स्कूल में विद्यार्थी के प्रत्येक काम में उसके संवेगों का समावेश होता है यदि स्कूल का कार्यक्रम उसके अनुसार होगा तो उसे अपनी सफलताओं पर हर्ष होगा और वह बड़ी खुशी से आने वाले उत्साहवर्धक कार्यों की प्रतीक्षा करेगा।"



संवेग तथा शिक्षा

अभ्यास-1 : विगत वर्षों के CTET एवं STET के प्रश्न

1. बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को भूमिका निभानी चाहिए।

[CTET-2011-I]

- (a) सहानुभूतिपूर्ण (b) तटस्थ
(c) नकारात्मक (d) अग्रोन्मुखी

2. 'मन का मानचित्र' सम्बंधित है-

[CTET-2011-II]

- (a) मन का चित्र बनाने से
(b) मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से
(c) बोध (समझ) बढ़ाने की तकनीक से
(d) साहसिक कार्यों की क्रिया-योजना से

3. निम्न में से कौन-से कथन को सीखने की प्रक्रिया की विशेषता नहीं मानना चाहिए?

[CTET-2011-II]

- (a) सीखना लक्ष्योन्मुखी होता है
(b) अन-अधिगम भी सीखने की प्रक्रिया है
(c) शैक्षिक संस्थान ही एकमात्र स्थान है जहाँ अधिगम प्राप्त होता है
(d) सीखना एक व्यापक प्रक्रिया है

4. सीखना समृद्ध हो सकता है, यदि-

[CTET-2011-II]

- (a) शिक्षक विभिन्न प्रकार के व्याख्यान और स्पष्टीकरण का प्रयोग करें
(b) कक्षा में आर्वाधिक परीक्षाओं पर अपेक्षित ध्यान दिया जाए
(c) वास्तविक दुनिया से उदाहरणों को कक्षा में लाया जाए, जिसमें विद्यार्थी एक-दूसरे से अन्तःक्रिया करें और शिक्षक उस प्रक्रिया को सुगम बनाए
(d) कक्षा में अधिक-से-अधिक शिक्षण-सामग्री का प्रयोग किया जाए

5. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'सीखने' के बारे में सही है? [CTET-2011-II]

- (a) सीखना मूल रूप से मानसिक क्रिया है।
(b) बच्चों द्वारा की गई त्रुटियाँ यह संकेत करती हैं कि किसी तरह का सीखना नहीं हुआ

- (c) सीखना उस अव्यवस्था में प्रभावी होता है जो संवेगात्मक रूप से सकरात्मक हो और शिक्षार्थियों को संतुष्ट करने वाला हो।

- (d) सीखने के किसी भी चरण पर सीखना संवेगात्मक कारकों से प्रभावित नहीं होता।

6. शिक्षार्थी जो पहले सीख चुके हैं उसकी पुनरावृत्ति और प्रत्यास्मरण में शिक्षार्थियों की मदद करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि- [CTET-2011-II]

- (a) यह शिक्षार्थियों की स्मृति को बढ़ाता है जिससे सीखना सुदृढ़ होता है
(b) यह किसी भी कक्षा-अनुदेशन के लिए एक सुविधाजनक शुरुआत है
(c) नई जानकारी को पूर्व जानकारी से जोड़ना सीखने को समृद्ध बनाता है
(d) पूर्व पाठों को दोहराने का यह एक प्रभावी तरीका है

7. निम्नलिखित में से किस कथन को 'सीखने' के लक्षण के रूप में नहीं माना जा सकता?

[CTET-2011-II]

- (a) अन-अधिगम (unlearning) भी सीखने का एक हिस्सा है
(b) सीखना एक प्रक्रिया है जो व्यवहार में मध्यस्थता करती है
(c) सीखना कुछ ऐसी चीज है जो कुछ अनुभवों के परिणामस्वरूप घटित होती है
(d) व्यवहार का अध्ययन सीखना है

8. पिछले के अनुसार विकास की पहली अवस्था (जन्म से लगभग 2 वर्ष आयु तक) के दौरान बच्चा..... सबसे बेहतर सीखता है। [RIET-2011-II]

- (a) भाषा के नए अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग द्वारा
(b) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा
(c) निष्क्रिय (neutral) शब्दों को समझने के द्वारा
(d) अमूर्त तरीके से चिंतन द्वारा

9. बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता को भूमिका निभानी चाहिए।
[UPTET-2011-II]
- (a) सहानुभूतिपूर्ण (b) तटस्थ
(c) नकारात्मक (d) अग्रोन्मुखी
10. निःशक्त बच्चों के लिए समेकित शिक्षा की केंद्रीय प्रायोजित योजना का उद्देश्य है.....में निःशक्त, बच्चों को शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराना।
[CGTET-2011-II]
- (a) 'ब्लाइड रिलीफ एसोसिएशन' के विद्यालयों
(b) नियमित विद्यालयों
(c) विशेष विद्यालयों
(d) मुक्त विद्यालयों
11. 'पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते हैं'। यह कथन-
[CGTET-2011-II]
- (a) बुद्धि के भिन्न पक्षों के लिए सही है
(b) सही है
(c) सही हो सकता है
(d) लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है।
12. शिक्षार्थियों का 'आत्म-नियमन'.....की ओर संकेत करता है। [CGTET-2011-II]
- (a) स्व-अनुशासन और नियंत्रण
(b) अपने सीखने का स्वयं पर्यवेक्षण करने की उनकी योग्यता
(c) विद्यार्थियों के व्यवहार के लिए विनियम बनाना
(d) विद्यार्थी निकाय द्वारा बनाए गए नियम-विनियम
13. निम्नलिखित में से कौन-सा सीखने का क्षेत्र है?
[CTET-Jan. 2012-I]
- (a) भावात्मक (b) आध्यात्मिक
(c) व्यवसायिक (d) आनुवंशिक
14. जब बच्चा कार्य करते हुए ऊबने लगता है, तो यह इस बात का संकेत है कि-
[CTET-Jan. 2012-I]
- (a) बच्चा बुद्धिमान नहीं है
(b) बच्चे में सीखने की योग्यता नहीं है
(c) बच्चे को अनुशासित करने की ज़रूरत है
(d) संभवतः कार्य यांत्रिक रूप से बार-बार हो रहा है
15. निम्नलिखित में से कौन-सी समस्या-समाधान की वैज्ञानिक पद्धति का पहला चरण है?
[CTET-Jan. 2012-II]
- (a) समस्या के प्रति जागरूकता
(b) प्रासंगिक जानकारी को एकत्र करना
(c) प्राक्कल्पना का निर्माण करना
(d) प्राक्कल्पना का परीक्षण करना
16. एक शिक्षिका अपने-आप से कभी भी प्रश्नों के उत्तर नहीं देती। वह अपने विद्यार्थियों को उत्तर देने के लिए, समूह चर्चाएँ और सहयोगात्मक अधिगम अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह उपागम के सिद्धांत पर आधारित है।
[CTET-Jan. 2012-II]
- (a) अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना और भूमिका-प्रतिरूप बनना
(b) सीखने की तत्परता
(c) सक्रिय भागीदारी
(d) अनुदैर्घात्मक सामग्री के उचित संगठन
17. जब पूर्व का अधिगम नई स्थितियों के सीखने को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता, तो यह कहलाता है। [CTET-Jan. 2012-II]
- (a) अधिगम का शून्य स्थानान्तरण
(b) अधिगम का निरपेक्ष स्थानान्तरण
(c) अधिगम का सकारात्मक स्थानान्तरण
(d) अधिगम का नकारात्मक स्थानान्तरण
18. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों की सदैव इस रूप में सहायता करती है कि वे एक विषय-क्षेत्र से प्राप्त ज्ञान को दूसरे विषय-क्षेत्रों के ज्ञान के साथ जोड़ सकें। इससे को बढ़ावा मिलता है। [CTET-2012-II]
- (a) पुनर्बलन
(b) ज्ञान के सह-सम्बन्ध एवं अन्तरण
(c) वैयक्तिक भिन्नताओं
(d) शिक्षार्थी-स्वायत्तता
19. प्रभावी शिक्षण-प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कारक है-
[CTET-May-2012-II]
- (a) शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा समय को पाबंदी
(b) शिक्षक द्वारा विषय पर अधिकार
(c) शिक्षक-विद्यार्थी संवाद
(d) पाठ्यक्रमों का समय पर पूर्ण होना

20. सीखने की प्रक्रिया में निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है?

[CTET-May-2012-II]

- (a) बच्चों की अनुवर्षिकता
- (b) सीखने की शैली
- (c) बच्चों का परीक्षा-परिणाम
- (d) बच्चों की आर्थिक स्थिति

21. मोहित बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है इसलिए वह बी. एड. की प्रवेश परीक्षा के लिए खूब मेहनत करता है। वह अभिप्रेरित है।

[CTET-May-2012-II]

- (a) आंतरिक रूप से
- (b) बाह्य रूप से
- (c) सक्रिय रूप से
- (d) बौद्धिक रूप से

22. 'गतिविधि आधारित शिक्षण' पर बल देता है।

[CTET-May-2012-II]

- (a) अनुशासित कक्षा
- (b) सुनिश्चित समय-अवधि में गतिविधि पूरा करने
- (c) सभी विद्यार्थियों द्वारा सक्रिय भागीदारी
- (d) गतिविधि के समापन होने के बाद परीक्षा लेने

23. एक शिक्षिका अपनी कक्षा को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाती है-

[CTET-May-2012-II]

- (a) विद्यालय में रोनाना शिक्षण से अवकाश उपलब्ध कराने के लिए
- (b) प्रत्यक्ष अवलोकन के लिए बच्चों को अवसर उपलब्ध कराने के लिए
- (c) विद्यालय कैलेंडर में सुनिश्चित क्रियाकलाप करने के लिए
- (d) बच्चों को मनोरंजन उपलब्ध कराने के लिए

24. निम्नलिखित में से कौन-सा सीखने के लिए अधिकतम रूप से अभिप्रेरित करता है?

[CTET-Nov-2012-I]

- (a) लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्तिगत संतुष्टि
- (b) बाह्य कारक
- (c) असफलता से बचने के लिए अभिप्रेरणा
- (d) बहुत सरल या कठिन लक्ष्यों का चयन करने की प्रवृत्ति

25. वे शिक्षार्थी, जो संवृद्ध ज्ञान और शैक्षणिक दक्षता की हार्दिक इच्छा प्रदर्शित करते हैं, उनके पास होता है

[CTET-Nov-2012-I]

- (a) कार्य-परिहार अभिविन्यास
- (b) नैपुण्यता अभिविन्यास
- (c) निष्पादन-उपागम अभिविन्यास
- (d) निष्पादन-परिहार अभिविन्यास

26. शिक्षक.....के अलावा निम्नलिखित सभी को करते हुए समस्या-समाधान को विद्यार्थियों के लिए मज़ेदार बना सकता है।

[CTET-Nov-2012-I]

- (a) मुक्त अंत वाली सामग्री उपलब्ध कराने
- (b) मुक्त खेल के लिए समय देने
- (c) सृजनात्मक चिंतन के लिए असीमित अवसर उपलब्ध कराने
- (d) जब विद्यार्थी स्वयं से कोई कार्य करने को कोशिश कर रहे हों तो उनसे परिपूर्णता की अपेक्षा करने

27. प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए शिक्षण को उपयुक्त विधि है-

[HTET-2012-I]

- (a) प्रयास व भूल विधि
- (b) अनुकरण विधि
- (c) व्याख्यान विधि
- (d) खेल विधि

28. अधिगम के लिए क्या आवश्यक है?

[HTET-2012-I]

- (a) स्थानुभव
- (b) स्वचिंतन
- (c) स्वक्रिया
- (d) उपयुक्त सभी

29. बालकों में अधिगम-

[HTET-2012-I]

- (a) ज्ञान को रटने से होता है
- (b) पाठ्यपुस्तक को पढ़ने से होता है
- (c) शिक्षक द्वारा ज्ञान के स्थानान्तरण द्वारा होता है
- (d) क्रिया करके होता है

30. अधिगम प्रभावशाली रूप में होता है, यदि-

[HTET-2012-I]

- (a) बच्चों को सीखने के लिए तत्पर किया जाये
- (b) बच्चा, जो वह सीखता है उसे दुहराये
- (c) बच्चा संतुष्ट अनुभव करे
- (d) बच्चा उपयुक्त सभी करे

31. बच्चों में सीखने और सुनने के लिए अधिगम-योग्य वातावरण के लिए निम्नलिखित में से कौन उपयुक्त है? [CTET-2013-I]
- एक लम्बे समय के लिए निष्क्रिय रूप से सुनना
 - निरंतर गृहकार्य देते रहना
 - सीखने वाले द्वारा व्यक्तिगत कार्य करना
 - शिक्षार्थियों को कुछ यह छूट देना कि क्या सीखना है और कैसे सीखना है
32. एक शिक्षक (को) - [CTET-2013-II]
- शिक्षार्थियों द्वारा की गई त्रुटियों को एक भयंकर भूल के रूप में लेना चाहिए और प्रत्येक त्रुटि के लिए गंभीर टिप्पणी देनी चाहिए।
 - शिक्षार्थी कितनी बार गलती करने से बचता है - इसे सफलता के माप के रूप में लेना चाहिए।
 - जब शिक्षार्थी विचारों को संप्रेषित करने की कोशिश कर रहे हों तो उन्हें ठीक नहीं करना चाहिए।
 - व्याख्यान पर अधिक ध्यान देना चाहिए और ज्ञान के लिए आधार उपलब्ध कराना चाहिए।
33. मानव बुद्धि एवं विकास की समझ शिक्षक को के योग्य बनाती है। [CTET-2013-II]
- शिक्षण के समय शिक्षार्थियों के संवेगों पर नियंत्रण बनाए रखने
 - विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता
 - शिक्षार्थियों को यह बताने कि वे अपने जीवन में कैसे सुधार कर सकते हैं
 - निष्पक्ष रूप से अपने शिक्षण-अभ्यास
34. एक पी.टी. (खेल) शिक्षक क्रिकेट के खेल में अपने शिक्षार्थियों के क्षेत्र-रक्षण को सुधारना चाहता है। निम्न में से कौन-सी युक्ति शिक्षार्थियों को अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सर्वाधिक सहायक है? [CTET-2013-I]
- शिक्षार्थियों को यह बताना कि क्षेत्र-रक्षण सीखना उनके लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है।
 - बेहत क्षेत्र-रक्षण और सफलता को दर के पीछे के तर्कों को स्पष्ट करना।
 - क्षेत्र-रक्षण को प्रदर्शित करना और शिक्षार्थी अवलोकन करेंगे।
 - शिक्षार्थियों को क्षेत्र-रक्षण का अधिक अभ्यास करवाना।
35. एक शिक्षिका अपने शिक्षार्थियों को इस रूप में मदद करना चाहती है कि वे एक स्थिति को अनेक दृष्टिकोणों की सराहना कर सकें। वह विभिन्न समूहों में एक स्थिति पर वाद-विवाद करने के अनेक अवसर उपलब्ध कराती है। वाइगोत्स्की के परिप्रेक्ष्य के अनुसार उसकी शिक्षार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों को करेंगे और अपने तरीके से उस स्थिति के अनेक परिप्रेक्ष्य विकसित करेंगे। [CTET-2013-II]
- आत्मसात
 - निर्माण
 - सक्रियकरण
 - तुर्कसंगत
36. निम्नलिखित में से कौन-सा अधिगम को अधिकतम करने के लिए सर्वाधिक उचित है? [CTET-2013-II]
- शिक्षिका को अपनी संज्ञानात्मक शैली के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक शैली की पहचान करनी चाहिए।
 - शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नता को सहज बनाने के लिए समान शिक्षार्थियों के जोड़ बनाए जा सकते हैं।
 - अधिकतम परिणाम लाने के लिए शिक्षक केवल एक अधिगम शैली पर ध्यान केंद्रित करता है।
 - समान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले शिक्षार्थियों को एक कक्षा में रखना चाहिए ताकि मत वैभिन्न्य से बचा जा सके।
37. अंतर्परक अनुदेशन है- [CTET-2013-II]
- शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समूहीकरण के विविध रूपों का प्रयोग करना।
 - कक्षा में प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए कुछ अलग करना।
 - अव्यवस्थित अथवा स्वच्छंद शिक्षार्थी गतिविधियाँ
 - ऐसे समूहों का प्रयोग जो कभी नहीं बदलते

38. यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान लगातार गलतियाँ करते हैं तो शिक्षक को- [CTET-2013-II]

- अनुदेशन, कार्य, समय-सारिणी अथवा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए।
- पाठ को कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए और कुछ समय के बाद वापस जाना चाहिए।
- गलतियाँ करने वाले शिक्षार्थियों की पहचान करनी चाहिए और उनके बारे में प्राचार्य से बात करनी चाहिए।
- गलतियाँ करने वाले शिक्षार्थियों को कक्षा-कक्ष से बाहर खड़ा कर देना चाहिए।

39. अधिगम का सबसे उपयुक्त कार्य है-

[HTET-2014-I]

- व्यक्तिगत समायोजन
- सामाजिक व राजनीतिक चेतना
- व्यवहार परिवर्तन
- स्वयं को रोजगार के लिए तैयार करना

40. प्रोजेक्ट शिक्षण विधि किससे सम्बन्धित है?

[HTET-2014-I]

- फ्रॉबेल
- जॉन डीवी
- आर्मस्ट्रॉंग
- मैकड्युगल

41. 'समूह शिक्षण' है

[HTET-2014-II]

- संसाधनों, रुचि व विशेषता का इष्टतम उपयोग करने हेतु शिक्षकों के समूहों द्वारा शिक्षण है
- शिक्षकों को अनुपलब्धता के निवटने का एक उपाय है
- स्कूल में शिक्षकों के समूहों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है
- विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुसार छोटे समूहों में बाँटकर शिक्षण है

42. सीखने की प्रक्रिया में 'सीखने का स्थानान्तरण' हो सकता है-

[UPTET-2014-I]

- सकारात्मक
- नकारात्मक
- शून्य
- ये सभी

43. सीखने के नियम दिए हैं-

[UPTET-2014-II]

- पैबलॉव ने
- स्किनर ने
- थॉर्नडाइक ने
- कोह्लर ने

44. सीखना है-

[UPTET-2014-I]

- व्यवहार में परिवर्तन
- अनुभव तथा अभ्यास का परिणाम
- व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन
- उपरोक्त सभी

45. संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है-

[UPTET-2014-I]

- क्रोध और भय
- स्नेह तथा प्रेम
- उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल
- उपरोक्त में से कोई नहीं

46. कौशल सीखने की पहली अवस्था है-

[UPTET-2014-I]

- यथार्थता
- कल्पनाशीलता
- समन्वय
- अनुकरण

47. "बालक एक ऐसी पुस्तक है जिसका शिक्षक को आशोपाश करना चाहिए।"

उपरोक्त कथन किसके द्वारा दिया गया है?

[UPTET-2014-II]

- प्लेटो
- अरस्तू
- रूसो
- रॉस

48. 'सीखने के प्रकार' के निराकरण के लिए क्या नहीं करना चाहिए?

[UPTET-2014-II]

- सीखने वाले को प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहिए
- सीखने की अच्छी विधि का प्रयोग करना चाहिए
- उसे दण्डित करना चाहिए
- इनके कारणों का अध्ययन करना चाहिए

49. रुचि का सम्बन्ध है-

[UPTET-2014-II]

- योग्यता
- अवधान
- (a) और (b) दोनों
- इनमें से कोई नहीं

50. सीखे हुए ज्ञान, कौशल या विषय का अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने को कहते हैं-

[UPTET-2014-II]

- प्रेरणा
- सीखने का स्थानान्तरण
- भगनाशा
- चिन्ता

51. अनुबन्धन की प्रक्रिया में प्रथम सोपान निम्नांकित में से कौन-सा है ? [UPTET-2014-II]
- (a) उत्तेजना (b) आवृत्ति
(c) सामान्यीकरण (d) इनमें से कोई नहीं
52. विद्यार्थियों में प्रत्यय विकास या निर्माण के लिए शिक्षक- [UPTET-2014-II]
- (a) की शिक्षण विधि सरल से जटिल की ओर होनी चाहिए
(b) को विद्यार्थी को व्यापक अनुभव का अवसर प्रदान करना चाहिए
(c) को विद्यार्थी को निर्मित प्रत्ययों के अन्तरण का अवसर देना चाहिए
(d) को उपरोक्त सभी क्रियाएँ करनी चाहिए
53. कल्पना के विकास के लिए- [UPTET-2014-II]
- (a) ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना चाहिए
(b) कहानी सुनाना चाहिए
(c) रचनात्मक प्रवृत्ति के विकास पर ध्यान देना चाहिए
(d) उपरोक्त सभी क्रियाएँ करनी चाहिए
54. एक शिक्षक कक्षा के कार्य को एकत्र करता है और उन्हें पढ़ता है, उसके बाद योजना बनाता है और अपने अगले पाठ को शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समायोजित करता है। वह कर रहा/रही है। [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) सीखने का आकलन
(b) सीखने के रूप में आकलन
(c) सीखने के लिए आकलन
(d) सीखने के समय आकलन
55. सिद्धांत चित्र के द्वारा नवीन अवधारणाओं को समझ बढ़ाते हैं। [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) विषय-क्षेत्रों के बीच ज्ञान के स्थानांतरण
(b) विशिष्ट विवरण पर एकाग्रता केंद्रित करने
(c) अध्ययन के लिए शैक्षणिक विषय-वस्तु की प्राथमिकता तय करने
(d) तर्कपूर्ण ढंग से सूचनाओं को व्यवस्थित करने की योग्यता को बढ़ाने
56. निगमनात्मक तर्कणा में शामिल है/हैं- [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) सामान्य से विशिष्ट की ओर तर्कणा
(b) विशिष्ट से सामान्य की ओर तर्कणा
(c) ज्ञान का सक्रिय निर्माण और पुनर्निर्माण
(d) अन्वेषणपरक सीखना और स्वतः खोजपरक सम्बन्धी पद्धतियाँ
57. निम्न में से कौन-सी शब्दावली प्रायः "अभिप्रेरणा" के साथ अंतः बदलाव के साथ इस्तेमाल की जाती है? [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) पुस्कार (प्रेरक) ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐
(b) संवेग ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐
(c) आवश्यकता ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐
(d) उत्प्रेरणा ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐ ☐
58. प्रेरणाएँ अनुभूतियों के संतुष्टिकरण को अवस्थाओं तक पहुँचने और वैयक्तिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की आवश्यकता को सम्योहित करती हैं। [CTET-Sept.-2014-I]
- (a) प्रभावी (b) भावात्मक
(c) संरक्षण-उन्मुखी (d) सुरक्षा-उन्मुखी
59. शिक्षण का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य शिक्षकों से यह मांग करता है कि वे- [CTET-Sept.-2014-II]
- (a) कठोर अनुशासन बनाए रखने वाले बनें, क्योंकि बच्चे अकसर प्रयोग (जांच) करते हैं
(b) विकासात्मक कारकों के ज्ञान के अनुसार अनुदेशन युक्तियों का अनुकूलन करें
(c) विभिन्न विकासात्मक अवस्था वाले बच्चों के साथ समान रूप से व्यवहार करें
(d) इस प्रकार का अधिगम उपलब्ध कराएँ जिसका परिणाम केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र के विकास में हो
60. शिक्षार्थियों को सबसे कम प्रतिबद्धित विद्यालय वातावरण में रखने के माध्यम से, विद्यालय- [CTET-Sept.-2014-II]
- (a) लड़कियों और अलापलुप्त वर्गों के लिए शैक्षिक अवसरों को समान करता है
(b) वंचित वर्ग के बच्चों के जीवन को सामान्य करता है, जो इन बच्चों के समुदायों और अभिभावकों के साथ विद्यालय के संबंध को बढ़ा रहा है

- (c) विज्ञान मेला और प्रश्नोत्तरी जैसी गतिविधियों में अलाभान्वित वर्ग के बच्चों को भागीदार बनाता है
- (d) दूसरे बच्चों को संवेदनशील बनाता है कि वे अलाभान्वित बच्चों को दबाएँ नहीं और उन्हें नीचा न दिखाएँ
61. राजेश गणित को समस्या को हल करने के लिए पूरी तरह से संघर्ष कर रहा है। उसका आंतरिक बल, जो उसे उस समस्या को पूरी तरह से हल करने के लिए विवश करता है, के रूप में जाना जाता है।
[CTET-Sept.-2014-II]
- (a) प्रेरक
(b) व्यक्तित्व विशेषक
(c) संवेग
(d) प्रत्यक्षण
62. एक प्रभावशाली अध्यापिका होने के लिए यह महत्वपूर्ण है- [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) पुस्तक से उत्तरों को लिखाने पर बल देना
(b) समूह गतिविधि के बजाय वैयक्तिक अधिगम पर ध्यान देना
(c) विद्यार्थियों के द्वारा प्रश्न पूछने के कारण उत्पन्न व्यवधान को अनदेखी करना
(d) प्रत्येक बच्चे के सम्पर्क में रहना
63. शिक्षार्थियों के ज्ञान अर्जन में सहायता करने के क्रम में अध्यापकों को किस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए? [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) सुनिश्चित करना कि शिक्षार्थी सब कुछ याद करते हैं
(b) शिक्षार्थी के द्वारा प्राप्त किए गए अंकों/ग्रेडों पर
(c) शिक्षार्थी को सक्रिय सहभागिता के लिए शामिल करना
(d) शिक्षार्थी के द्वारा अधिगम ही अवधारणाओं में कुशलता प्राप्त करना
64. 'ऑउट-ऑफ-द-बॉक्स' चिन्तन किससे सम्बन्धित है? [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) अनुकूल चिन्तन
(b) स्मृति-आधारित चिन्तन
(c) अपसारी चिन्तन
(d) अभिसारी चिन्तन
65. शिक्षण में अध्यापकों के द्वारा विद्यार्थियों का आकलन इस अनर्द्रष्टि को विकसित करने के लिए किया जा सकता है-
[CTET-Feb.-2015-I]
- (a) उन विद्यार्थियों को पहचान करना जिन्हें उच्चतर कक्षा में प्रोन्नत करना है
(b) उन विद्यार्थियों को प्रोन्नत न करना जो विद्यालय के स्तर के अनुकूल नहीं हैं
(c) विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुसार शिक्षण उपागम में परिवर्तन करना
(d) कक्षा में 'प्रतिभाशाली' तथा 'कमजोर' विद्यार्थियों के समूह बनाना
66. बच्चों को शाब्दिक या गैर-शाब्दिक दृष्टि देने का परिणाम होता है- [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित करना
(b) बच्चों की छवि की सुरक्षा करना
(c) उनके अंकों में सुधार करना
(d) उनके स्वयं के प्रति अवधारणा को नष्ट करना
67. अध्यापिका ने ध्यान दिया कि पुष्पा अपने-आप किसी एक समस्या का समाधान नहीं कर सकती हैं। फिर भी वह एक वयस्क या साथी के मार्गदर्शन को उपस्थिति में ऐसा करती हैं। इस मार्गदर्शन को कहते हैं- [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) पार्श्वकरण
(b) पूर्व-क्रियात्मक चिन्तन
(c) समीपस्थ विकास का क्षेत्र
(d) सहाय देना
68. लॉरेंस कोहलबर्ग के सिद्धान्त में कौन-सा स्तर नैतिकता को अनुपस्थिति को सही अर्थ में सूचित करता है? [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) स्तर III (b) स्तर IV
(c) स्तर I (d) स्तर II
69. "कोई भी नाराज हो सकता है- यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है।" यह सम्बन्धित है- [CTET-Feb.-2015-I]
- (a) संवेगात्मक विकास से
(b) सामाजिक विकास से
(c) संज्ञात्मक विकास से
(d) शारीरिक विकास से

70. किस प्रकार से एक अध्यापिका बच्चों को बेहतर समाधानकर्ता बनने में सहायता कर सकती है?
[CTET-Feb.-2015-II]
- समस्याओं का समाधान करने के लिए वस्तु रूप में पुरस्कार देना
 - बच्चों को विविध प्रकार की समस्याओं को समाधान करने के मौके देना तथा उनका हल प्राप्त करते समय सहयोग देना
 - बच्चों को पाठ्य-पुस्तक में समस्याओं के उत्तर देखने के लिए प्रोत्साहित करना
 - विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत सभी समस्याओं का सही समाधान उपलब्ध कराना
71. एक शिक्षार्थी-केन्द्रित कक्षा-कक्ष में अध्यापिका करेगी- [CTET-Feb.-2015-II]
- मुख्य तथ्यों की व्याख्या करने के लिए व्याख्यान पद्धति का प्रयोग करना और बात में शिक्षार्थियों का उनकी सजगता के लिए आकलन करना।
 - अधिगम को सुगम बनाने के लिए बच्चों को एक-दूसरे के साथ अंकों के लिए मुकाबला करने हेतु प्रोत्साहित करना।
 - वह अपने विद्यार्थियों से जिस प्रकार की अपेक्षा करती है उसे प्रदर्शित करना और तब बच्चों को वैसा करने के लिए दिशा-निर्देश देना।
 - इस प्रकार की पद्धतियों को नियोजित करना जिसमें शिक्षार्थी अपने स्वयं के लिए पहल करने में प्रोत्साहित हों।
72. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे बेहतर ढंग से वर्णन करता है कि कक्षा में बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए क्यों प्रोत्साहित करना चाहिए ? [CTET-Feb.-2015-II]
- जिन चीजों के बारे में बच्चे नहीं जानते हैं, उनके बारे में विचार करवाकर उन्हें यह महसूस करवाया जा सकता है कि उनमें बुद्धि की कमी है।
 - प्रश्न बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाते हैं।
 - प्रश्न अन्योन्यक्रिया के द्वारा अधिगम को आगे बढ़ाते हैं तथा संकल्पनात्मक स्पष्टता की दिशा में बढ़ते हैं।
 - बच्चों को अपने भाषा कौशलों के अभ्यास की आवश्यकता होती है।
73. आपकी कक्षा में कुछ बच्चे हैं जो गुलतियाँ करते हैं। इस परिस्थिति का आपके विश्लेषण के अनुसार इनमें से कौन-सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है ? [CTET-Feb.-2015-II]
- बच्चों ने अभी तक संकल्पनात्मक स्पष्टता प्राप्त नहीं की है तथा आपको अपनी शिक्षण-विधि पर चिन्तन करने की आवश्यकता है।
 - बच्चों का बुद्धि-स्तर निम्न है।
 - बच्चों की अध्ययन में रुचि नहीं है और वे अनुशासनहीनता उत्पन्न करना चाहते हैं।
 - बच्चों को आपकी कक्षा में प्रोत्त नहीं करना चाहिए था।
74. उच्च प्राथमिक विद्यालय की गणित-अध्यापिका के रूप में आप विश्वास करती हैं कि- [CTET-Feb.-2015-II]
- विद्यार्थियों को कार्यविधिक ज्ञान को जानने की आवश्यकता होती है, चाहे वे संकल्पनात्मक आधार नहीं समझते हों।
 - विद्यार्थियों की गुलतियाँ उनके चिन्तन में अन्तर्दृष्टियाँ उपलब्ध कराती हैं।
 - उच्च प्राथमिक विद्यालय के सभी बच्चों में गणित पढ़ने की योग्यता नहीं होती है।
 - लड़के गणित को बिना अधिक प्रयास किए सीख जाएँगे, क्योंकि यह उनकी 'जन्मजात' विशेषता है तथा आपको लड़कियों के ऊपर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
75. एक बच्चे को हमारा सहारा देने की मात्रा एवं प्रकार में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है- [CTET-Feb.-2015-II]
- बच्चे की नैसर्गिक योग्यताएँ
 - अध्यापिका की मनोदशा
 - कार्य के लिए प्रस्तावित पुरस्कार
 - बच्चे के निष्पादन का स्तर

76. बच्चों में ज्ञान की रचना करने और अर्थ का निर्माण करने की क्षमता होती है। इस परिप्रेक्ष्य में एक शिक्षक की भूमिका है:

[CTET-Sept.-2015-II]

- संप्रेषक और व्याख्याता की
- सुगमकर्ता की
- निर्देशक की
- तालमेल बैठाने वाले की

77. बच्चों की त्रुटियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

[CTET-Sept.-2015-I]

- बच्चों की त्रुटियाँ उनके सीखने की प्रक्रिया का अंग है।
- बच्चे तब त्रुटियाँ करते हैं जब शिक्षक सौम्य हो और उन्हें त्रुटियाँ करने पर दंड न देता हो।
- बच्चों की त्रुटियाँ शिक्षक के लिए महत्वहीन हैं और उसे चाहिए कि उन्हें काट दे और उन पर अधिक ध्यान न दे।
- असावधानी के कारण बच्चे त्रुटियाँ करते हैं।

78. एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में आपके पास कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे हैं जो प्रथम पीढ़ी के रूप में विद्यालय आ रहे हैं। आपके द्वारा निम्नलिखित में से किसे किए जाने की संभावना सर्वाधिक है?

[CTET-Sept.-2015-II]

- माता-पिता को बुलाएँगे और उनसे अपने बच्चों का द्यूशन लगाने को नम्रतापूर्वक कहेंगे।
- कक्षा गतिविधि के समय और गृहकार्य के लिए उन्हें बुनियादी सहयोग और अन्य सहायता उपलब्ध करारेंगे।
- उन्हें याद करने के लिए और उत्तर को पाँच बार अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखने के लिए गृहकार्य देंगे।
- बच्चों से कहेंगे कि उनमें आगे बढ़ने की क्षमता नहीं है और अब उन्हें अपने माता-पिता के काम में सहायता करनी चाहिए।

79. अपनी कक्षा के बच्चों को उनकी अपनी अवधारणाओं को बदलने में आप किस प्रकार सहायता करेंगे? [CTET-Sept.-2015-II]

- अवधारणाओं के बारे में बच्चों को अपनी समझ को व्यक्त करने का अवसर देकर।

- बच्चों को सूचनाएँ लिखाकर उन्हें याद करने को कहकर।
- यदि बच्चों की अवधारणाएँ गलत हों तो उन्हें दण्ड देकर।
- तथ्यात्मक दृष्टिकोण देकर।

80. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बच्चों के त्रुटियों के सम्बन्ध में सबसे उपयुक्त है?

[CTET-Sept.-2015-II]

- बच्चों की गलतियाँ एक खिड़की के समान होती हैं, यह जानने के लिए कि वे किस प्रकार सोचते हैं।
- गलतियों से बचने के लिए बच्चों को शिक्षक का अनुकरण करना चाहिए।
- बच्चों की गलतियों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और उन्हें कठोर दंड दिया जाना चाहिए ताकि वे गलतियाँ न दोहराएँ।
- बच्चे गलतियाँ करते हैं क्योंकि उनमें विचार करने की क्षमता नहीं होती।

81. आकलन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है क्योंकि:

[CTET-Sept.-2015-II]

- बच्चों को अंक दिए जाने चाहिए ताकि वे समझ सकें कि अपने सहपाठियों की तुलना में कहीं पर हैं।
- आकलन से अध्यापक बच्चों के अधिगम को समझता है और उसके अपने शिक्षण की परिपुष्टि भी होती है।
- आकलन ही एकमात्र तरीका है जो आवश्यक करता है कि शिक्षकों ने पढ़ाया और बच्चों ने सीखा।
- आज के समय में केवल अंक ही शिक्षा में महत्वपूर्ण है।

82. प्राथमिक विद्यालय के कक्षा-कक्षा के संदर्भ में सक्रियबद्धता का क्या अर्थ है?

[CTET-Feb.-2016-I]

- शिक्षक द्वारा दिए गए उत्तरों को नकल करना
- याद करना, प्रत्यास्मरण और सुनना
- शिक्षक का अनुकरण और नकल करना
- जोड़-पड़ताल करना, प्रश्न पूछना और याद-विवाद

83. भारत में अधिकांश कक्षाएँ बहुभाषी होती हैं और इसे शिक्षक द्वारा _____ के रूप में देखा जाना चाहिए। [CTET-Feb.-2016-I]

- बाधा
- परीशानि
- समस्या
- संसाधन

84. जटिल परिस्थिति को संसाधित करने में शिक्षक बच्चों की सहायता कर सकता है

[CTET-Feb.-2016-I]

- कार्य को छोटे हिस्सों में बांटने के बाद निर्देश लिखकर
- प्रतियोगिता को बढ़ावा देकर और सबसे पहले कार्य पूरा करने वाले बच्चे को पुरस्कार देकर
- कोई भी सहायता न देकर, जिससे बच्चे अपने आप निर्वाह करना सीखें
- उस पर एक भाषण देकर

85. अधिगमकर्ता-केन्द्रित विधि का आशय है

[CTET-Feb.-2016-II]

- परंपरागत व्याख्यात्मक विधियाँ
- उन विधियों को अपनाना, जिनमें शिक्षक मुख्य कर्ता (पात्र) होता है
- वे विधियाँ जहाँ अधिगम में अधिगमकर्ता की अपनी पहल तथा प्रयास सम्मिलित होते हैं
- कि शिक्षक अधिगमकर्ता के लिए स्वयं निष्कर्ष निकाल देते हैं

86. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सीखने के लिए प्रमुख है? [CTET-Feb.-2016-II]

- रटकर याद करना
- अनुकरण
- अर्थ-निर्माण
- अनुबंधन

87. निम्नलिखित में से कौन सा 'आधारभूत सहायता' का एक अच्छा उदाहरण है (जिसका आशय है समस्या-समाधान को तब तक सिखाना जब तक शिक्षार्थी स्वयं न कर सकें)

[CTET-Feb.-2016-II]

- उसे कहना कि जब तक यह समस्या का समाधान नहीं कर लेती तब तक घर पर नहीं जा सकती
- समस्या का समाधान जल्दी देने के लिए पुरस्कार देना
- उसे यह बताना कि वह बार-बार प्रयास द्वारा कर सकती है
- उसे आधा समाधान (हल) किया उदाहरण उपलब्ध करवाना

88. भाषा [CTET-Feb.-2016-II]

- हमारी विचार-प्रक्रिया को प्रभावित करती है
- विचार-प्रक्रिया का निर्धारण नहीं कर

सकती

- विचार-प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करती
- हमारी विचार-प्रक्रिया को पूरी तरह से नियंत्रित करती है

89. एक शिक्षक अपनी प्राथमिक कक्षा में प्रभावी अधिगम को बढ़ा सकती है:

[CTET-Sept.-2016-I]

- अधिगम में छोटी-छोटी उपलब्धियों के लिए पुरस्कार देकर
- डिल और अभ्यास के द्वारा
- अपने विद्यार्थियों में प्रतियोगिता को प्रोत्साहन देकर
- विषयवस्तु को विद्यार्थियों के जीवन के साथ संबंधित करके

90. एक बच्चा खिड़की के सामने से एक कौबे को उड़ता हुआ देखता है और कहता है, "एक पक्षी।" इससे बच्चे के विचार के बारे में क्या पता चलता है?

[CTET-Sept.-2016-II]

- बच्चे की स्मृतियों पहले ही भंडारित होती हैं।
- बच्चे में 'पक्षी' का प्रत्यय विकसित हो चुका है।
- बच्चे ने अपने अनुभव बताने के लिए भाषा के कुछ उपकरणों का विकास कर लिया है।

- A और B
- B और C
- A, B और C
- A और B

91. दो विद्यार्थी एक ही अवतरण को पढ़ते हैं, फिर भी इसके बिल्कुल भिन्न अर्थ लगाते हैं। उनके बारे में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

[CTET-Sept.-2016-II]

- संभव नहीं है, क्योंकि अधिगम का आशय अर्थ लगाना नहीं है।
- संभव नहीं है और विद्यार्थियों को उसे दुबारा पढ़ना चाहिए।
- संभव है, क्योंकि शिक्षक ने अवतरण को समझाया नहीं है।
- संभव है, क्योंकि व्यक्ति के अधिगम को विविध कारण विभिन्न विधियों से प्रभावित करते हैं।

92. यदि कोई शिक्षिका चाहे कि उसके विद्यार्थी समस्या-समाधान कौशल प्राप्त कर लें, तो विद्यार्थियों को ऐसे क्रियाकलापों में लगाना

- चाहिए जिनमें हो: [CTET-Sept.-2016-II]
- पूछना, तर्क करना और निर्णय लेना
 - बहुविकल्पी प्रश्नों वाले स्तरीकृत कार्यपत्रक
 - प्रत्यास्मरण, रटना और समझना
 - डि़ल और अभ्यास
93. स्मृति स्तर के शिक्षण प्रतिमान के प्रतिपादक हैं: [HTET-2017]
- जॉन एफ॰ हरबर्ट
 - एच॰ सी॰ मोरिसन
 - नेड ए॰ फ्लेन्डर्स
 - इनमें से कोई नहीं
94. शिक्षार्थी की अभिरुचि एवं अभिक्षमता के बारे में वैध एवं विश्वसनीय निष्कर्ष पर पहुँचने की विधि है: [HTET-2017]
- वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधि
 - अन्तर्निरीक्षण विधि
 - प्रयोगात्मक विधि
 - सभी विकल्प सही हैं
95. निम्नलिखित में से कौन-सी शिक्षण व्यूह रचना सज़ानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्षों के तहत अधिगम उद्देश्यों को पूरा करती है? [HTET-2017]
- व्याख्यान
 - समूह चर्चा
 - भूमिका निर्वहन
 - अधिक्रमि़त अनुदेशन
96. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है? [HTET-2017]
- मेधा एवं सर्जनात्मकता एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं
 - एक मेधावी बालक हो सकता है सर्जनात्मक न हो
 - एक सर्जनात्मक बालक ऊँचे दर्ज़े का मेधावी हो सकता है
 - सर्जनात्मकता का पोषण किया जा सकता है
97. शिक्षा मनोविज्ञान की विषयवस्तु निम्न में से किन मुख्य कारकों के ओत-प्रोत घूमती है? [HTET-2017]
- शिक्षार्थी एवं अधिगम अनुभव
 - शिक्षक एवं अधिगम प्रक्रिया
 - अधिगम परिस्थितियाँ
 - सभी विकल्प सही हैं

98. निम्न में से कौन-सी विधि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण के लिए उपयुक्त नहीं है? [HTET-2017]
- समस्या समाधान विधि
 - गतिविधि उपकरण
 - व्याख्यान विधि
 - प्रोजेक्ट विधि
99. कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है: [HTET-2017]
- विशिष्ट अधिगम परिस्थितियाँ निर्माण के लिए
 - शिक्षक के बोझ को कम करने के लिए
 - कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए
 - शिक्षण में आवश्यक होने के नाते
100. सज़ानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर है [UPTET-2017]
- ज्ञान
 - बोध
 - अनुप्रयोग
 - विश्लेषण
101. "किसी दूसरी वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण अवधान है।" यह कथन है [UPTET-2017]
- डम्बिल का
 - रॉस का
 - मन का
 - मैकडुलल का
102. निम्न में से कौन-सा सीखने के मुख्य नियमों में शामिल नहीं है? [UPTET-2017]
- तत्परता का नियम
 - अभ्यास का नियम
 - बहु-अनुक्रिया का नियम
 - प्रभाव का नियम
103. इनमें से किनका नाम 'सृजननशास्त्र के पिता' से जुड़ा हुआ है? [UPTET-2017]
- क्रो एवं क्रो
 - गाल्टन
 - रॉस
 - बुडवर्थ
104. "सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।" यह कथन है [UPTET-2017]
- कोल एवं ब्रूस का
 - डैवहल का
 - डीहान का
 - क्रो एवं क्रो का

उत्तरमाला

1	(d)	14	(d)	27	(d)	40	(b)	53	(d)	66	(d)	79	(a)	92	(a)
2	(c)	15	(a)	28	(d)	41	(a)	54	(c)	67	(d)	80	(a)	93	(a)
3	(c)	16	(c)	29	(c)	42	(d)	55	(d)	68	(c)	81	(b)	94	(a)
4	(c)	17	(a)	30	(a)	43	(c)	56	(d)	69	(a)	82	(d)	95	(c)
5	(c)	18	(b)	31	(d)	44	(d)	57	(c)	70	(c)	83	(d)	96	(a)
6	(c)	19	(c)	32	(c)	45	(c)	58	(b)	71	(c)	84	(a)	97	(d)
7	(d)	20	(b)	33	(b)	46	(d)	59	(b)	72	(b)	85	(c)	98	(c)
8	(b)	21	(a)	34	(d)	47	(c)	60	(d)	73	(a)	86	(c)	99	(a)
9	(d)	22	(c)	35	(a)	48	(c)	61	(a)	74	(b)	87	(d)	100	(a)
10	(b)	23	(b)	36	(a)	49	(b)	62	(d)	75	(a)	88	(a)	101	(a)
11	(d)	24	(a)	37	(a)	50	(b)	63	(c)	76	(b)	89	(d)	102	(c)
12	(d)	25	(c)	38	(a)	51	(a)	64	(c)	77	(a)	90	(c)	103	(b)
13	(a)	26	(d)	39	(c)	52	(d)	65	(c)	78	(b)	91	(d)	104	(d)

व्याख्या सहित उत्तर

2. (c) 'मन का मानचित्रण' यह संरचनावाद (कन्स्ट्रक्टविज्म) पर आधारित सीखने की एक पद्धति है।
13. (a) प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से भावात्मक (Affective) सीखने का क्षेत्र है। इसके अंतर्गत अनुभूति, मूल्य, संवेग, अभिप्रेरणा एवं अभिरूचि इत्यादि आते हैं।
31. (d) शिक्षार्थियों को सीखने एवं सुनने के लिए स्वतंत्रता देना, उनमें आत्मविश्वास बढ़ाता है जिससे बच्चों में सीखने एवं सुनने के लिए एक अधिगम-योग्य वातावरण का निर्माण करती है।
32. (c) जब शिक्षार्थी अपने विचारों को सम्प्रेषण करने की कोशिश कर रहे हों, तो शिक्षक को उन्हें ठीक नहीं करना चाहिए, न कि उन्हें डराना या धमकाना चाहिए।
33. (b) मानव बुद्धि एवं विकास को समझ एक शिक्षक को विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता के योग्य बनाती है।
36. (a) शिक्षिका को अधिगम को अधिकतम बनाने के लिए अपनी संज्ञात्मक शैली के साथ-साथ अपने शिक्षार्थियों की संज्ञात्मक शैली को पहचान करनी चाहिए।
37. (a) अंतरपरक अनुदेशन एक अनुदेशात्मक सिद्धांत है। इस सिद्धांत के आधार पर शिक्षक एक कक्षा के अन्दर छात्रों को सीखने की शैली, हितों एवं क्षमताओं का पता लगाकर, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समुहिकरण कर विविध रूपों का प्रयोग करना है।
38. (a) यदि शिक्षार्थी पाठ के दौरान गलतियाँ करते हैं तो शिक्षक को अनुदेशन, कार्य, समय-सारिणी तथा बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहिए।
76. (b) शिक्षक को ज्ञान या दक्षता का निर्देशों के द्वारा अनुपालन करना चाहिए वहाँ पर एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करना चाहिए जहाँ छात्र अपने-आप गतिविधियों को करके ज्ञान प्राप्त कर सकें।
77. (a)
78. (b) शिक्षा के क्षेत्र में बुनियादी सहयोग एक प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है जिसमें शिक्षक समस्या समाधान प्रक्रिया का मॉडल तैयार करते हैं। उसके बाद जितनी मदद करने की जरूरत होती है, उतनी मदद करते हैं।
79. (a) बच्चों के विषय वस्तु के संदर्भ में अपनी समझ के प्रदर्शन के लिए एक अवसर की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
80. (a) बच्चों की गलतियाँ एवं मिथ्या धारणाओं का अवलोकन कर उन्हें जितनी जल्दी हो सके, सही करना चाहिए। गलतियाँ सोचने के तरीकों एवं सीखने की स्थितियों का उपचार कर सकती है। यह सीखने में महत्वपूर्ण अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है।